## प्र.1. मात्रा रहित वाक्यों को सही करकर लिखिए । 30 [30]

उदा. कम क उचछद करन म समथ इस धम क पपत अतयत दलभ ह

उत्तर कर्म का उच्छेद करने में समर्थ इस धर्म की प्राप्ति अत्यंत दुर्लभ है । [149]

पृष्ठ क्र.

1) मनव क पपत मन ह उसक पतन व उतथन क मखय करण ह

मानव को प्राप्त मन ही उसके पतन व उत्थान का मुख्य कारण है। [२५९]

2) पतपल मरणत वदन क सहन करत हए भ उनक कभ अकलमतय नह हत ह

प्रतिपल मरणांत वेदना के सहन करते हुए भी उनकी कभी अकालमृत्यु नहीं होती है। [२०३]

3) रग क पबल नमतत क बच अनसकत रहन अतयत ह कठन ह

राग के प्रबल निमित्त के बीच अनासक्त रहना अत्यंत ही कठिन है। [१]

4) रग अर मतय स बचन वल इस दनय म कइ नह ह

राग और मृत्यु से बचाने वाला इस दुनिया में कोई नहीं है। [२२५]

5) ससर क समसत सख दख रप ह दखफलक ह अर दख क परपर क बढनवल ह

संसार के समस्त सुख, दुःख रूप हैं, दुःखफलक हैं और दुःख की परंपरा को बढ़ानेवाले हैं। [७७]

6) ज्ञनदषट खल गइ ह उस त वश्रवसदर क दह म भ मत्र हड-मस-चम अर गदग क ह दशन हत ह

ज्ञानदृष्टि खुल गई हो, उसे तो विश्वसुंदरी के देह में भी मात्र हाड़-मांस, चाम और गंदगी के ही दर्शन होते हैं। [१०२]

7) कस क पत वरभव मत रख अर सभ जव क सथ मत्र क सबध सथपत कर ।

किसी के प्रति वैरभाव मत रखो और सभी जीवों के साथ मैत्री का संबंध स्थापित करो। 266

8) ज्ञन क अजण ह जय त वयकत अहकर बनत ह

ज्ञान का अजीर्ण हो जाय तो व्यक्ति अहंकारी बनता है। 246

9) यवन क पगण म पवश करन क बद भग सख स अलपत रहन अतयत कठन ह

यौवन के प्रांगण में प्रवेश करने के बाद भोग सुखों से अलिप्त रहना, अत्यंत कठिन है। 142

10) अज वयकत पद पपत क लए अनक पकर स मय-कपट क अश्रय लत ह

आज व्यक्ति पद-प्राप्ति के लिए अनेक प्रकार से माया-कपट का आश्रय लेता है, 94

11) अतम छट स नमतत क पकर भ जगत ह जत ह

आत्मा छोटे से निमित्त को पाकर भी जागृत हो जाती है। 277

12) पण क नश हन पर भ अदततदन नह गहण करन क पतज्ञवल ह

प्राणों का नाश होने पर भी अदत्तादान नहीं ग्रहण करने की प्रतिज्ञावाला है। 127

13) सजजन मत्र क समगम स समनय मनव भ महन बन सकत ह

सज्जन मात्र के समागम से सामान्य मानव भी महान बन सकता है। 213

14) अपन दह क पत उनह नम मत्र भ ममतव नह थ

अपने देह के प्रति उन्हें नाम मात्र भी ममत्व नहीं था। 17

15) य चरत्रगथ हमर सषपत चतन क जगत कए बन नह रहत ह

ये चरित्रग्रंथ हमारे सुषुप्त चेतना को जागृत किए बिना नहीं रहते हैं। IV

25

प्र.2. मोक्ष में गई हुई 25 निर्मल आत्माओं की सूचि बनाइए । उनके दीक्षा अथवा मोक्ष का कारण है, संक्षेप में लिखिये । **25**

उदा. 1) गागली–मन संसार से विरक्त हुआ — दीक्षा कारण **233**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | मरुदेवीमाता | शुभ ध्यान की धारा में लीनता । | मोक्ष कारण | २४ |
| २. | ढंढण अणगार | अपने पापों की तीव्र आलोचना - सिद्धस्वरूप के ध्यान में लीनता | मोक्ष कारण | ८0 |
| 3. | ब्राह्मी | ऋषभदेव प्रभु की वैराग्यवाहिनी देशना सुनना | दीक्षा | २5 |
| 4 | कीर्तिधर | संसार की अनित्यता बताती भवनिर्वेदिनी देशना | दीक्षा | 189 |
| 5 | सुकोशलमुनि | सियालिनी द्वारा उपसर्ग में आत्मध्यान - लीनता । | मोक्ष | 19२ |
| 6. | पुष्पचूला | नरक-देवगति स्वरूप से संसार के प्रति तीव्र वैराग्य । | दीक्षा | 119 |
| 7. | अर्णिकापुत्र आ. | मरणांत उपसर्ग में भी आर्तध्यान - क्रोध त्याग | मोक्ष | 1२1 |
| 8. | अतिमुक्तक | 'इरियावहियं सूत्र' का रटण करते (२) हृदय से तीव्र पश्चाताप - | मोक्ष | 1२४ |
| 9. | नागदत्त | जैनधर्म की निर्मल आराधना । | मोक्ष | 1२7 |
| 10 | नागदत्त | क्रोधादि शत्रुओं को जीतना । | मोक्ष | 130 |
| 11. | मेतार्य मुनि | मरणांत उपसर्ग में अनन्य समता । | मोक्ष | 139 |
| 1२. | सोनी | मुनि हत्या के कारण श्रेणिक राजा के भय से । | दीक्षा | 139 |
| 13. | सुदर्शन सेठ | संसार से विरक्तता । | दीक्षा | २18 |
| 14. | मनोरमा | पती के दीक्षा स्वीकार के कारण । | दीक्षा | २18 |
| 15. | करकंडु | बलवान सांड का कमजोर रुप व मृत्यु देखकर वैराग्य | दीक्षा | २२5 |
| 16. | दशार्णभद्र | इन्द्र का वैभव देखकर अभिमान का नशा उतरा । | दीक्षा | २55 |
| 17. | प्रसन्नचंद्र | मोह को निर्मूल करनेवाली धर्मदेशना सुनना | दीक्षा | २57 |
| 18 | जंबूकुमार | संसार की भयानकता व मोक्ष की मंगलमयता सुनना । | दीक्षा | २86 |
| 19. | साल | संसार के भयंकर रौद्र स्वरुप का वर्णन सुनना | दीक्षा | २3२ |
| २0. | महासाल | बाह्य साम्राज्य का नि:सार प्रतीत होना | दीक्षा | २3२ |
| २1. | पीठर | संसार से विरक्त पुत्र का दीक्षा का संकल्प देखना । | दीक्षा | २33 |
| २२. | केशीकुमार श्रमण | संयमधर्म की निर्मल आराधना । | मोक्ष | २10 |
| २3 | भरत | अनित्यादि भावना भाने से केवलज्ञान प्राप्ति | मोक्ष | 4२ |
| २४. | बाहुबली | भाई को मारने के लिये उठाई मुट्ठी के कारण स्वत: से विचार | दीक्षा | 36 |
| २5. | यशोमती | चंपानगरी की ओर बढ़ते, मार्ग में ही शुभ अध्यवसाय - शुक्ल ध्यान की धारा पर चढ़ते हुए क्षपक श्रेणी पर आरूढ़ होकर केवली | मोक्ष | २33 |

**प्र.3. प्रश्न एक उत्तर दों ।** 20 **20**

1. हम पूर्वभव में गोवाल थे ।

1. सुदर्शन सेठ [211] 2. शालिभद्र [234]

2. हम प्रतिबोध देने दूसरी गति से आये ।

1. शाकडिक देवरूप में मित्रदेव [128] 2. मित्र देव (सौवास्तिक) [134]

3. हमारें 100 पुत्र हुए ।

1. ऋषभदेव प्रभु [15] 2. प्रसेनजित राजा [45]

4. हमारा नाम एक किंतु एक ने दीक्षा ली तो एक युद्ध का कारण बनी ।

1. पद्मावती [222] 285 2. पद्मावती [227]

5. हमनें दीक्षा को त्याग दिया ।

1. नंदिषेण मुनि [172] 2. वराहमिहिर [247]

6. एक ही आत्मा का मैं दीक्षा दाता तो मै गुरु हूँ ।

1. सुधर्मास्वामी [323] 2. जंबूस्वामी [323]

7. हम कपटी श्राविकाएँ बनी ।

1. रत्नमंजरी वेश्या [61] 2. मागधिका वेश्या [230]

8. हम रिश्तें मे जीजा साला थे किंतु बाद में मुनि बने । दो जोडीयाँ ।

A. 1. पीठर [232] 2. महासाल [232]

B. 1. धनगिरि [143] 2. आर्यसमित [143]

9. हमारें लिए शासनदेवी प्रकट हुई ।

1. यक्षा साध्वी [111] 2. दृढ-प्रतिज्ञ नागदत्त (1) [127]



* (1) कृतपुण्य = 186 पर है ।

प्र.4. तालिका पूर्ण किजिये । शब्द अथवा वाक्य का प्रयोग कीजिये । 20 [20]

| | नाम | इस भव का गुण | | इस भव का दोष | |
|---|---|---|---|---|---|
| उदा. | बाहुबली | अतुल बली | 2 | अभिमान | 38 |
| 1. | भरत | अनासक्तयोगी | 1 | राज्य - लोभ मे युद्ध-नीति का उल्लंघन | 36 |
| 2. | स्थुलिभद्र | ब्रह्मचर्य सम्राट | 83 | विद्याभिमान से विद्या का दुरुपयोग | 112 |
| 3. | मैतार्य | क्षमासागर | 131 | भारी कर्मी सांसारिक सुखासक्त | 136 |
| 4. | भवदेव | दाक्षिण्य व लज्जा गुण | 271 | द्रव्य से चारित्र का पालन | 272 |
| 5. | कोशा | उच्च कोटि की श्राविका | 103 | वेश्या वृत्ति | 84 |
| 6. | नंदिषेण | सेवाभाव - वैयावच्च | 175 | निदान किया | 177 |
| 7. | प्रभव | तीव्र वैराग्य भावना | 322 | अभिमान | 308 |
| | **नाम** | **इस भव का गुण** | | **पूर्व भव का दोष** | |
| 8. | मैतार्य | अनन्य समताधारी | 138 | मुनिजीवन पर दुगुंछा | 134 |
| 9. | ढंढण मुनि | अलाभ परिषह विजेता | 79 | किसानों के व बैलों के भोजन में विघ्न | 79 |
| 10. | सुंदरी | स्वदेह - शोषक | 5 | माया - मिथ्यात्व से युक्त ईर्ष्या का पाप | 12 |

**प्र.5.A=उत्तर संख्या अनुसार लिखिये ।** 20 [20]

उदा.1. ज्ञान = 5 = 1) मतिज्ञान 2) श्रुतज्ञान 3) अवधिज्ञान
4) मन: पर्यव ज्ञान 5) केवलज्ञान [202]

1. आत्मा के शत्रु = 4 =

राग-द्वेष, मोह, अज्ञान और कषाय [२९]

2. बंधन = 5 =

राग-द्वेष, मोह, परिग्रह, स्त्री तथा स्वजन की ओर आसक्ति [२०८]

3. आचार्य भद्रबाहुस्वामी रचित ग्रंथ = 4 =

कल्प, व्यवहार, दशाश्रुतस्कंध और निशिथ ये 4 छेदसूत्र [२53]

4. अवग्रह = 5 =

इन्द्र संबंधी, चक्री संबंधी, राजा संबंधी, गृहस्थ संबंधी, साधु संबंधी [39]

5. एक तीर्थंकर के मनुष्य भवों के नाम = 5 = (पृ.क्र. सहीत)

धन्ना सार्थवाह (10), वज्रजंघ (7) जीवानंद वैद्य (7)
वज्रनाभ (10), ऋषभ (13)

6. 4 सर्प + अजगर इनके द्योतक = 5 =

काम - क्रोध - मद - लोभ और मोह के द्योतक [313]

7. अष्टापद पर्वत से मोक्ष जानेवाली आत्माएँ = 4 (पृ.क्र. सहीत)

श्री ऋषभदेव प्रभु (41), भरत केवली - ब्राह्मी - सुंदरी साध्वीजी (42)

B. स्थूलभद्र महामुनि, वज्रस्वामी, जंबुस्वामी के कालधर्म के बाद किस किस का विच्छेद हुआ ।

स्थूलभद्र महामुनि के कालधर्म के बाद भरत क्षेत्र में शेष चार पूर्वों का ज्ञान, महाप्राणायाम ध्यान, समचतुरस्र संस्थान, वज्रऋषभनाराच (प्रथम) संघयण [113]
वज्रस्वामी के कालधर्म के बाद दसवें पूर्व, चौथे संघयण और संस्थान का विच्छेद हुआ। [166]
जंबुस्वामी के निर्वाण के साथ ही भरतक्षेत्र में मनःपर्यव ज्ञान, परमावधिज्ञान, पुलाक लब्धि, आहारक लब्धि, क्षपक श्रेणी, उपशम श्रेणी, जिनकल्प आदि तीन चारित्र (परिहार विशुद्धि, सूक्ष्म संपराय, यथाख्यात चारित्र), केवलज्ञान, और सिद्धिपद का विच्छेद हो गया। [308]

प्र.6. ऐसे 10 परिवारों कें सभी दीक्षार्थी सदस्यों कें नामों की सूची बनाइये जिनके दीक्षादाता एक ही थे, नाम लिखिये । **20**

19

- कमसे कम 2 ◆ रिश्ता नहीं लिखें ।
- पृ.क्र. सहित लिखिये ।

**232**

उदा. 1) साल 2) महासाल = महावीर प्रभु
(भाई भाई) (दीक्षा दाता)

| | | |
|---|---|---|
| 1. | 1) ऋषभसेन 2) मरीचि = ऋषभदेव प्रभु | 25, |
| | 3) ब्राह्मी 4) सुंदरी 5) भरत के 500 पुत्र व 700 पौत्र 6) प्रभु के 98 पुत्र | 28, 30 |
| 2. | 1) माता यशोमती 2) पिता पीठर 3) पुत्र गागली | 233 |
| | = गौतम स्वामी भगवंत | |
| 3. | 1) श्रीयक 2) यक्षा आदि 7 बहिनें = संभूतिविजय आचार्य | 110 |
| | 3) स्थूल भद्र | |
| 4. | 1) धनगिरि 2) आर्यसमित = सिंहगिरि मुनि | 143 |
| | 3) वज्र 4) सुनंदा | 149 |
| 5. | 1) भद्रबाहु 2) वराहमिहिर = श्री यशोभद्रसूरिजी म. | 246 |
| | | |
| 6. | 1) भवदत्त 2) भवदेव = सुस्थित आचार्य भगवंत | 267, |
| | | 271 |
| 7. | 1) जंबूकुमार 2) ऋषभदत्त 3) धारिणी = सुधर्मा स्वामी | 323 |
| | 4) जंबूकुमार की आठ पत्नियाँ 5) आठ पत्नियों के माता-पिता | |
| 8. | 1) वज्रसेन 2) वज्रनाभ 3) बाहु 4) सुबाहु = तीर्थंकर वज्रसेन | 11 |
| | 5) पीठ 6) महापीठ | |
| 9. | 1) धन्यकुमार 2) सुभद्रा आदि आठ पत्नियाँ = वीर प्रभु | 242 |
| | 3) शालिभद्र | |
| 10. | 1) हल्ल ③ अभयकुमार = भगवान महावीर | 230 |
| | 2) विहल्ल ④ नंदीषेण | |

प्र.7.A. ऐसे 15 नाम लिखिये जिनके नाम में 'दत्त' शब्द हो । 30

- कोई भी नाम रिपीट ना करे । 30

उदा. नागदत्त = 125

1. सागरदत्त 7 2. ईश्वरदत्त 7 3. वसुदत्त 63

4. देवदत्त 114 5. यज्ञदत्त 125 6. धनदत्त 126

7. जिनदत्त 181 8. वज्रदत्त 276 9. ऋषभदत्त 282

10. समुद्रदत्त 285 11. श्रमणदत्त 285 12. प्रेमदत्त 312

13. प्रियदत्त 312 14. महादत्त 312 15. महेश्वरदत्त 317

प्र.7. B.जिनके नामो में दो जोडी से अक्षरों की समानता हो ऐसे स्वजनों की जोडीयाँ बताए ।

❖ प्र.7. A. के नाम को प्र.7. B में रिपीट न करे ।

❖ एक भी नाम रिपीट न करे ।

उदा. हल्ल – विहल्ल – 226

1. भाई-भाई 10-जोडीयां ।

1. पीठ - महापीठ 11 2. बाहु - सुबाहु 11

3. काल - महाकाल 226 4. भवदत्त - भवदेव 267

5. ऋषभदास - जिनदास 265 6. साल - महासाल 232

7. पुंडरीक - कंडरीक 194 8. सागरचंद्र - मुनिचंद्र 131

9. कृष्णकुमार - सुकृष्णकुमार 228 10. वीरकृष्ण - रामकृष्ण 228

2. पति-पत्नी

1. पुष्पकेतु - पुष्पवती 116 2. पुष्पचूल - पुष्पचूला 117

3. अर्हद्दास - अर्हद्दासी २१२ 4. भावड़शा - भावलादेवी 154

3. पिता-पुत्र

1. गोभद्र - शालिभद्र २३७ 2. श्रेणिक - कोणिक २२६

4. आचार्य-शिष्य

1. वज्रस्वामी - वज्रसेन 165 2. सिंहगिरि - धनगिरि 143

5. सौत

1. कनकसेना - कनकवती २८५ 2. पद्मसेना - नभःसेना २८५

6. माता-पुत्री

1. जयसेना - जयश्री २८५

7. भाई-बहन

1. कुबेरदत्त - कुबेरदत्ता 315

8. चचेरे भाई-भाई

1. आदित्ययश - चन्द्रयश ४२-३७

**प्र.8. A. ऐसी आत्माओं की सूचि बनाइये जो आगामी देव भव पूर्ण कर मोक्ष में जायेंगे ।** 25

23

1. अभय मुनि ७४ 2. कृतपुण्य मुनि 187

3. पुंडरीक मुनि 197 4. शालिभद्र मुनि २४४

5. धन्य मुनि २४४ 6. हल्ल २३० 7. विहल्ल २३०

B. "12 वर्ष" से जुडी घटनायें लिखिए ।

❖रिपीट ना करे

उदा. 12 वर्ष का भयंकर अकाल पड़ा । 109

1. 12 वर्ष तक भरत के राज्याभिषेक का महोत्सव चला । 26
2. भरत - बाहुबली का युद्ध 12 वर्ष तक चला । 34
3. मुनि स्थूलभद्र भूतकाल में 12 वर्ष तक वेश्या संग रहे । 98
4. मेतार्य ने 12 वर्ष तक भोग - सुखों का अनुभव किया । 137
5. नंदिषेण ने 12 वर्ष तक 43200 व्यक्तियों को धर्मबोध दिया । 167
6. लोगों 12 वर्ष बाद विशालानगरी के द्वार खोल दिए । 231
7. छट्ठ के पारणे आयंबिल का तप करते हुए भाव साधु शिवकुमार को 12 वर्ष बीत गए 281
8. कृतपुण्य ने 12 वर्ष अनंगसेना के वहाँ रहते हुए बीताये । 179
9. भवदेव ने 12 वर्ष तक चारित्रधर्म का पालन किया किन्तु मन से 'नागिला' को न निकाल सके । 262

C. "500" अंक से जुड़े कुछ तथ्य लिखिये ।

1. सुबाहुमुनि ने एक नहीं 500-500 मुनियों की रात-दिन सेवा की । 3
2. वज्रनाभ महामुनि के परिवार में 500 साधु महात्मा थे । 12
3. भरत के अन्य 500 पुत्रों ने भी दीक्षा स्वीकार की । 25
4. भरत ने 500 बैलगाडियाँ भरकर आहार सामग्री वैरागी बंधुओं के लिए मंगवाई । 39
5. श्रीसंघ ने स्थूलभद्र आदि 500 मुनियों के दृष्टिवाद सीखने भद्रबाहु स्वामी के पास भेजा । 110
6. वज्रसेन मुनि की बात सुन 500 शिष्य भी अनशन व्रत स्वीकारने को तैयार हो गए । 165
7. दशार्णभद्र राजा की ऋद्धि में सुखासन में बैठी हुई 500 रानियाँ थी । 255
8. जंबूकुमार के उपदेश से प्रभव चोर 500 साथियों के साथ दीक्षा के लिए तैयार हो गया । 306
9. मनुष्यलोक के दुर्गंधीत पुद्गल 400-500 योजन तक के वातावरण को दूषित कर देते हैं । 204



श्रेणिक राजा के 500 पुत्र थे । 57

आठ आठ पत्नीयोंको प्रतिबोधित किया, संसार की माया का दर्शन करवाया।
सब बन गयी जंबूकुमार की माया, भौतिक सुख त्याग कर संयम अपनाया॥

प्र.9. जंबुकुमार ने अपनी पत्नियों को कैसे प्रतिबोधित किया, संक्षेप में लिखिए। पृष्ठ क्र. सहित लिखे। 5

5

वैरागी जंबूस्वामीने आठ कन्याओंसे विवाह किया क्योंकि वे उन्हें भी प्रतिबोधित कर सके। शादी के प्रथम रात्रि को आठों पत्नीओं ने एक-एक दृष्टांत द्वारा इस भव में प्राप्त विषय भोग का सेवन करने के लिए समझाया। सभी दृष्टांतो का सारांश यह था कि परलोक के परोक्ष सुखोंके लोभ में आकर वर्तमान के प्रत्यक्ष सुखोंका त्याग नहीं करना चाहिए। प्रत्युत्तर में जंबूजीने भी उन्हें एक एक दृष्टांत द्वारा प्रतिबोधित कर संसार के सुखोंसे विमुख कराया।

* समुद्रश्री- डूबनेवाले पत्थर की नाव समान स्त्रियों के ममत्व का त्याग ही करना चाहिये (२९१) * पद्मश्री - आत्मा तुच्छ सुखो से अतृप्त ही रहता है। आत्मिक शास्वत सुख पाने के लिए पुरुषार्थ करना चाहिये (२९३)। * पद्मसेना - तुच्छ सुखो में आसक्त होकर दीर्घकाल तक भव भ्रमण के बजाय मुक्तिसुख पाकर भवभ्रमण बंद करना चाहिये (२९५)। * नभसेना - शास्वत सुखोंकी उपेक्षा करके क्षणिक सुखो मे आसक्त समझदार व्यक्ति नहीं होता (३००)। कनकसेना- विषयोंके आकर्षण का विष आत्मा को अनेक भवों तक डूबाता है (३०१)। कनकश्री- अपने भावी हित को लक्ष्य में रख कर निर्णय लिया जाये तो बाद मे पछताना नहीं पड़ता (३०१)। * जयश्री - विषयसुख प्रारंभ में मधुर लगते हैं पर परिणाम कडु है अतः दुःखमुक्ति के लिए संयम की साधना करनी चाहिये (३०५) कमलवती - संसार के भौतिक सुख अल्पजीवी है, मृत्यु होते ही अंत हो जाता है। शारीरिक सुखोंके लोभ में आध्यात्मिक सुखों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। (३०६) इस तरह उन्हें भी संयम के लिये प्रेरित कर दिया।